सेन्ट्रल जोन इंश्योरेन्स एम्पलाईज एसोसियेशन

(ए.आई.आई.ई.ए. से सम्बद्ध)

प्रभांजलि, 33, आर.डी.ए. कालोनी, टिकरापारा, रायपुर (छ.ग.)

अध्यक्ष : का. एन. चक्रवर्ती

महासचिव : का. बी. सान्याल

परिपत्र क्र. : 02/2015

दिनांक : 01-05-2015

मध्य क्षेत्र के समस्त बीमा कर्मियों के नाम

प्रिय साथियों,

विषय : मई दिवस अमर रहे

मई दिवस 2015 के अवसर पर हम बीमा कर्मचारियों के साथ-साथ दुनिया व देश के समस्त मेहनतकशों को क्रांतिकारी अभिनंदन एवं लाल सलाम पेश करते हैं। समूचे विश्व में 1 मई का दिन मेहनतकशों की अंतर्राष्ट्रीय एकजुट कार्यवाहियों के रूप में 'मई दिवस' के रूप में मनाया जाता है। आज इस अवसर पर हम समूची दुनिया में जारी क्रान्तिकारी आंदोलन एवं वर्ग संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए अपने आपको समर्पित करने का संकल्प लेते हैं।

सन् 1886 में 8 घंटे के कार्य दिवस किए जाने की मांग को लेकर अमेरिका के शिकागो शहर में लाखों मजदूरों ने हड़ताल कर सभाएं आयोजित कर ऐतिहासिक संघर्ष चलाया था। इससे घबराकर मालिकों के दलालों ने हड़ताल व संघर्ष कर रहे मजदूरों पर सभा के दौरान बम विस्फोट कर उनकी हत्या की और इस आंदोलन के नेताओं को इस विस्फोट के लिए जिम्मेदार ठहराया तथा उन्हें झूठे मुकदमें में फंसाया गया। तत्कालीन पूंजीवादी शासक वर्ग ने 4 मजदूर नेताओं को फांसी की सजा सुना दी। यह पूंजीवाद का मजदूर वर्ग पर एक सुनियोजित राजनीतिक हमला था। लेकिन इसके बाद भी आंदोलन समाप्त नहीं हुआ। आज के दिन दुनिया भर के मेहनतकश धर्म, भाषा, जाति, रंग, लिंग व राष्ट्र के भेदभाव से ऊपर उठकर सच्चे अर्थों में मजदूरों की अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता का परिचय देते हुए इस दिवस को अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के रूप में मनाते हुए शोषण रहित नई समाज व्यवस्था की स्थापना के लिए संघर्ष जारी रखने का संकल्प लेते हैं।

वर्ष 2015 का मई दिवस एक ऐसी परिस्थितियों में मनाया जा रहा है जब एक ओर साम्राज्यवादी ताकतें अमेरिका के नेतृत्व में विभिन्न महाद्वीपों में जनता पर घृणित हमले जारी रखे हुए है। इन संकटग्रस्त देशों की राष्ट्रीय सम्प्रभुता को कुचलने की कोशिशें जारी हैं। मध्यपूर्व और लातिन अमेरिका उनके हमलों का प्रमुख निशाना बने हुए हैं। इन देशों की सरकारों द्वारा इस ओर उठाए जा रहे कदमों के विरुद्ध जगह-जगह जन असंतोष उभर रहे हैं।

ब्रिटेन, फ्रांस, ग्रीस, स्पेन, पुर्तगाल आदि देशों में इन्हीं कदमों से उभरे जन असंतोष के चलते बड़ी-बड़ी आम हड़तालें हुई हैं। इटली में दक्षिणपंथी प्रधानमंत्री एवरिको लेट्टा को इस्तीफा देना पड़ा और

वामपंथी मध्यमार्गी मेहियो रेजी के नेतृत्व में सरकार बनी। समाजवादी क्यूबा के नेतृत्व में लातिन अमेरिका की बहादुर जनता इन साम्राज्यवादी हमलों के खिलाफ एक विशाल जन आंदोलन के निर्माण का रास्ता दिखा रही है। ग्रीस में हाल ही में संसदीय चुनावों में वामपंथी रुझान वाली पार्टी सर्जिया ने बहुमत हासिल किया है जो पूंजीवाद के गढ़ में भी आम जनता का बहुमत नवउदारवादी नीतियों के विरोध को प्रदर्शित करता है। दूसरी ओर मेहनतकश जनता दुनिया में नवउदारवाद की नीतियों के हमलों की चपेट में है। इन नीतियों ने समस्त मेहनतकशों पर अमानवीय मुसीबतें थोप दी हैं। मेहनतकश जनता दुनिया के हर हिस्से में संघर्षों व हड़ताल के माध्यम से प्रतिरोध का झण्डा उठा रही है।

मई दिवस 2014 और मई दिवस 2015 के मध्य देश में राजनैतिक परिवर्तन हुआ है और भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में एन.डी.ए. ने देश का शासन नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्रित्व में सम्हाल लिया है। अब यह बात स्पष्ट होती जा रही है कि जिस नरेन्द्र मोदी ने चुनाव के पहले इस देश की जनता के साथ जो वायदे किये थे कि अच्छे दिन आएंगे, देश का विकास सबका विकास होगा, महंगाई कम होगी, भ्रष्टाचार समाप्त हो जाएगा, किसान खुशहाली में जीवन व्यतीत करेगा इत्यादि, इत्यादि। लेकिन अब हमें सब वायदे खोखले नजर आ रहे हैं। इस देश का किसान अपनी फसल को चौपट होते देख आज भी आत्महत्या करने पर मजबूर है। महंगाई की मार से आम जनता परेशान है। महिलाओं, अल्पसंख्यकों, दलितों एवं कमजोर वर्गों पर हमले जारी हैं। हमारे देश में देशी-विदेशी कार्पोरेट के हमले तीव्र हुए हैं। मोदी सरकार के अंधाधुंध विनिवेशीकरण, एफ.डी.आई. एवं कार्पोरेटपरस्त नीतियों के माध्यम से देश के बहुमूल्य संसाधनों को पूंजीपतियों को लूट के लिए छोड़ दिया गया है। श्रम कानूनों में मालिक परस्त नीतियां बनाई जा रही हैं, जिससे भारत का मेहनतकश दास प्रथा के दौर में धकेल दिया जायेगा। इसके खिलाफ जारी मेहनतकशों की व्यापक एकता को तोड़ने के लिए हर प्रकार की सांप्रदायिक, विभाजनकारी एवं फूटपरस्त ताकतें सक्रिय हो गई हैं। शिक्षा व संस्कृति का साम्प्रदायीकरण किया जा रहा है एवं भारत के धर्म निरपेक्ष चरित्र को ही समाप्त करने की कोशिश की जा रही है।

इस परिप्रेक्ष्य में निश्चय ही मई दिवस के ऐतिहासिक मौके पर नवउदारवाद की आर्थिक नीतियों के खिलाफ मेहनतकशों का संघर्ष का काफिला आगामी दिनों में और मजबूत होगा, यह हमारा विश्वास है। बीमा कर्मचारी उपरोक्त नीतियों की खिलाफत करते हुए राष्ट्रीयकृत बीमा उद्योग को बर्बाद करने के मकसद से बीमा क्षेत्र में एफ.डी.आई. की सीमा को 26 प्रतिशत से बढ़ाकर 49 प्रतिशत किये जाने के लिए बनाए गए कानून के खिलाफ जनमत संघर्षों में जुटे हैं। आगामी दिनों में इसके लिए भी हमें हमारा जन अभियान व्यापक रूप से जारी रखना होगा। हमें 1 अगस्त 2012 से लंबित वेतन पुनर्निधारण को बिना किसी शर्तों के हासिल करने हेतु आगामी दिनों में पुख्ता संघर्ष के लिए तैयार रहना होगा।

एक बार पुन: मई दिवस के मौके पर आप तमाम साथियों को असंख्य अभिनंदन के साथ साथ भारत के मेहनतकशों को नव उदारवादी हमलों के खिलाफ एकजुटता से जनतांत्रिक आंदोलन को आगे बढ़ाने के संघर्ष को तेज करना होगा।

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ

आपका साथी

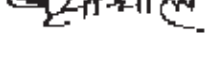

महासचिव

दुनिया के मजदूरों एक हो